International Journal For Technological Research In Engineering
Volume 10, Issue 1, September-2022 *ISSN (Online): 2347 - 4718*

अभिभावकों का शैक्षिक स्तर एवं उनके बालकों की शैक्षिक उपलब्धि एवं रूचियाँ

सुधांशु शर्मा, शोधछात्र, लॉर्ड्स विश्वविद्यालय, चिकानी, अलवर।
डॉ. सविता गुप्ता, प्रोफेसर, लॉर्ड्स विश्वविद्यालय, चिकानी, अलवर।

सार

व्यक्ति के जीवन में शिक्षा का अतुलनीय योगदान होता है क्योंकि व्यक्ति जीवन में जो कुछ भी सीखता है उसमे स्वयं का जीवन तो संचालित करता ही है वरन् वो न्यूनाधिक रूप से अन्य के जीवन को भी प्रभावित करता है।

आज वर्तमान में शिक्षा, शिक्षापद्धति, शिक्षक–शिक्षार्थी में तो परिवर्तन आया ही है अपितु अभिभावको का दृष्टिकोण भी परिवर्तित हुआ है। अभिभावकों का व्यवहार, शैक्षिक स्तर, परिवेश शिक्षार्थी के अधिगम, सृजनात्मकता बुद्धि के साथ संवेगों, रूचियों एवं शैक्षिक उपलब्धियों को निश्चित तौर पर प्रभावित करता है।

रूचियाँ :– रूचि किसी वस्तु या विषय से संबंध जोड़ने वाली एक मानसिक अवस्था है जिसमें सुख–भाव निहित होता है। **क्रो एण्ड क्रो** :– रूचि वह प्रेरक शक्ति है जो हमे किसी व्यक्ति, वस्तु, या क्रिया के प्रति ध्यान देने के लिए प्रेरित करती है।

शैक्षिक उपलब्धि :– शैक्षिक उपलब्धि से तात्पर्य शिक्षा के क्षेत्र में प्राप्त परिणामों से होता है।

चार्ल्स ई. स्किनर –"शैक्षिक उपलब्धि शैक्षिक कार्य का अन्तिम परिणाम जो विद्यार्थियों के सीखने के बारे में अन्तिम जानकारी प्रदान करता है।"

टरमैन तथा मैरिल ने अपने अध्ययन के आधार पर यह स्पष्ट किया कि बच्चों की बुद्धिलब्धि पर उसके माता पिता की शैक्षिक, सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति का प्रभाव पड़ता है। इस आधार पर कह सकते हैं कि बालक की शैक्षिक उपलब्धि, शैक्षिक रूचि, मूल्यों पर अभिभावकों के शैक्षिक स्तर का प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है।

1. प्रस्तावना

"जिस प्रकार पौधों के लिए कृषि आवश्यक है उसी प्रकार व्यक्ति के विकास के लिए शिक्षा आवश्यक है।"

व्यक्ति के जीवन में शिक्षा का अतुलनीय योगदान होता है क्योंकि व्यक्ति जीवन में जो कुछ भी सीखता है उसमे स्वयं का जीवन तो संचालित करता ही है वरन् वो न्यूनाधिक रूप से अन्य के जीवन को भी प्रभावित करता है। व्यक्ति की शिक्षा का प्रभाव उसके परिवार समाज में भी परिलक्षित होता है भारतीय समाज में वैदिक काल से ही शिक्षा को लेकर एक अलग तरह का प्ररिप्रेक्ष्य रहा है। भारतीय समाज में प्राचीनकाल से शारीरिक शिक्षा के साथ आध्यात्मिक विकासोन्मुख शिक्षा पर जोर दिया गया है।

आज वर्तमान में शिक्षा, शिक्षापद्धति, शिक्षक–शिक्षार्थी में तो परिवर्तन आया ही है अपितु अभिभावको का दृष्टिकोण भी परिवर्तित हुआ है। अभिभावकों का व्यवहार, शैक्षिक स्तर, परिवेश शिक्षार्थी के अधिगम, सृजनात्मकता बुद्धि के साथ संवेगों, रूचियों एवं शैक्षिक उपलब्धियों को निश्चित तौर पर प्रभावित करता है।

शिक्षा जीवन का सबसे महत्वपूर्ण पहलू हैं इससे न केवल हम सीखते है बल्कि एक जिम्मेदार, समझदार और मेहनती नागरिक बनते हैं। शिक्षा के माध्यम से ही ज्ञान, कौशल, विवेक जागृत होता है और परिस्थितियों के अनुकूल निर्णय लेने की क्षमता विकसित होती है हर व्यक्ति के जीवने में शिक्षा की एक महत्वपूर्ण भूमिका होती है शिक्षा ने हमेशा से ही एक व्यक्ति में बेहतर व्यक्तित्व का निर्माण किया है शिक्षा का उद्देश्य केवल परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करना ही नही होता है बल्कि शिक्षा के माध्यम से नई चीजों को सीखने के साथ–साथ उसके ज्ञान में भी वृद्धि भी की जा सकती है।

 Copyright 2022.All rights reserved.

2. अभिभावकों का शैक्षिक स्तर –

शिक्षा किसी भी राष्ट्र के भविष्य के लिए आधार है यह मानव शक्ति एवं क्षमता के विकास एवं उनका सही प्रकार से उपयोग का एक शक्तिशाली साधन है कहा जाता है। कि शिक्षा जीवन के लिए एक तैयारी नही है, बल्कि शिक्षा ही जीवन है।

बालक की शिक्षा यात्रा का प्रारम्भिक बिन्दू परिवार ही होता है परिवार में भी सबसे अहम स्थान अभिभावक का होता है जो कि बालक को शिक्षा के लिए निरन्तर प्रेरित और निर्देशित करने में प्रमुख निर्णायक होता है। अभिभावको का तात्पर्य बालक के माता–पिता से होता है अभिभावक अर्थात माता–पिता अपने बच्चों के प्रारम्भिक बचपन के विकास को संवारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है शिक्षा का प्रथम अनुभव बालक अपने घर से ही प्राप्त करता हैं एक बालक के जीवन में उसका विद्यालय, उसका परिवार ही होता है और उसके प्रमुख मार्गदर्शक उसके अभिभावक ही होते है। जो उसके जीवन को उत्कृष्ठ बनाने संवारने में अपना महत्वपूर्ण योगदान देते है।

बालक की शैक्षिक स्थिति में अभिभावकों का महत्वपूर्ण योगदान होता है अभिभावक बालकों के उज्ज्वल भविष्य को साकार रूप देने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निर्वाह करते है। प्रत्येक अभिभावक अपने बच्चों की शिक्षा हेतु अपने घर को एक बेहत्तर स्थान बनाते है तथा बच्चों को शिक्षा का एक स्वच्छ वातावरण उपलब्ध कराते है क्योकि अस्वच्छ वातावरण बच्चों के विकास में रूकावट बन सकता है।

अभिभावक बालक के भरण पोषण तक सीमित नही है वरन् सर्वागीण विकास के लिए अपना महत्वपूर्ण योगदान देते है परिवार अर्थात अभिभावक बालके के शैक्षिक विकास में भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। अभिभावकों के शैक्षिक स्तर का बालके की शैक्षिक उपलब्धियों पर गहरा असर पड़ता है तथा उसकी शैक्षिक रूचि भी प्रभविता होती है एक बालक के शैक्षिक विकास, उसकी रूचि तथा शैक्षिक उपलब्धि पर जितना प्रभाव एक विद्यालय का पडता है उससे भी अधिक प्रभाव उसके अभिभावकों को शैक्षिक स्तर का पड़ता है। बालक–अभिभावक का संबंध जितना अच्छा होगा उतना ही उनका शैक्षिक उपलब्धि स्तर प्रभावी होगा तथा ऐसे बालकों की रूचियाँ भी उत्तमता लिए हुए होगी। कहावत चरितार्थ होती है–

माता शत्रुः पिता बैरी, येन बालो न पाठितः।
न शोभते सभामध्ये हंसमध्ये बको यथा।।

3. शैक्षिक उपलब्धि

शैक्षिक उपलब्धि से तात्पर्य शिक्षा के क्षेत्र में प्राप्त परिणामों से होता है दुसरे शब्दों में "बालकों द्वार की जाने वाली उस कक्षा कक्ष की क्रिया को शैक्षिक उपलब्धि कहते है जो बालकों द्वारा पूरे सत्र में की जाती है शैक्षिक उपलब्धि को कक्षा का वातावरण अभिभावकों का शैक्षिक स्तर, सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति, रूचियाँ आदि घटक प्रभावित करते है शैक्षिक उपलब्धि वर्तमान सामाजिक–आर्थिक संदर्भ में सर्वोत्तम, विशिष्ट एवं महत्वपूर्ण कारक है।

स्पष्ट रूप से शैक्षिक उपलब्धि बालक की सभी उपलब्धियों को प्रभावित करती है।

गैरेट के अनुसार – ''उपलब्धि परीक्षणों का प्रयोग छात्रों के सामान्य शैक्षिक स्तर या स्थिति और किसी विशेष विषय में उनके ज्ञान का निश्चय करने के लिये किया जाता है।''[1]

चार्ल्स ई. स्किनर –"शैक्षिक उपलब्धि शैक्षिक कार्य का अन्तिम परिणाम जो विद्यार्थियों के सीखने के बारे में अन्तिम जानकारी प्रदान करता है।"

शैक्षिक उपलब्धि उन क्रियाकलापों का प्राप्त परिणाम है जो उनकी विद्यालय की शैक्षिक व सहशैक्षिक गतिविधियों के आधार पर प्राप्त होती है जिसको प्राप्त करने के लिए विद्यार्थी को विद्यालय जाना पड़ता है। विद्यालय के अन्दर कक्षा–कक्ष की गतिविधियों के आधार पर शैक्षिक उपलब्धि को ज्ञात किया जाता है। विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को ज्ञात करने के लिए शिक्षा सत्र में अधिगम परीक्षाओं का उपयोग किया जाता है। परीक्षा में प्राप्त अंकों के आधार पर शैक्षिक उपलब्धि को निश्चित किया जाता है।

[1] अग्रवाल, जे.सी., शैक्षिक तकनीकी प्रबन्ध एवं मूल्यांकन, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, 2005 पृ.सं. 335

 Copyright 2022.All rights reserved.

शैक्षिक अनुसंधानों के आधार पर यह स्पष्ट हुआ है कि शैक्षिक उपलब्धि गृह वातावरण, विद्यालय वातावरण, बालक का स्वास्थ, बालक के संगी साथी आदि कई कारक हैं जिनसे प्रभावित होती है।

4. रूचि :–

रूचि किसी वस्तु या विषय से संबंध जोड़ने वाली एक मानसिक अवस्था है जिसमें सुख–भाव निहित होता है। यह वातावरण एवं अनुभवों द्वारा निर्मित होती है। इसके निर्माण में जन्मजात प्रेरक भी महत्वपूर्ण होते है बालक प्रारम्भ में इन्ही से प्रेरित होकर व्यवहार करता है। जो वस्तु या विषय उसे संतोष देते है उसके प्रति उसकी रूचि विकसित हो जाती है। यह स्थायी शक्ति है जो अन्य कार्य करने से विलिन नही होती है।

रूचि को अंग्रेजी भाषा में INTERST कहते है जिसकी उत्पत्ति लेटिन भाषा के शब्द "INTERESSE" से हुई है। जिसका अर्थ है अंतर स्थापित होना, महत्वपूर्ण होना अर्थात जिस वस्तु में हमे रूचि होती है वह हमारे लिए दुसरी वस्तुओं से भिन्न और महत्वपूर्ण होती है एवं हमे उससे लगाव होता है।

रूचि शब्द की उत्पत्ति संस्कृत भाषा के "रूच" धातु से भी हुई है जिसका अर्थ है रोचकता लाना अर्थात पसन्द करना। कुछ ने कुछ संबंध होता है। मनुष्य क्या–क्या काम करना पसन्द करता हैं यह मनुष्य की मानसिक क्रियाओं पर निर्भर करता है रमणीक स्थल पर जाकर भूगर्भवेता वहां की मिट्टी एंव चट्टानों का अध्ययन करता है वनस्पतिशास्त्र वहां के पेड़–पौधों का निरीक्षण करता है कवि महोदय वहां के पृथक–पृथक रूप से वहां की विभिन्न वस्तुओं से अपना संबंध स्थापित किया। यह संबंध उन व्यक्तियों की रूचि द्वारा निर्धारित होता है।

हम रूचि को शाब्दिक रूप में "संबंध की भावना भी कह सकते है जिस तरह हम किसी से संबंधित है या जो वस्तु हम से संबंधित है वही हमारी रूचि है। जैसे– मैं संगीत में रूचि रखता हूँ। अर्थात संगीत एक ऐसा विषय है जो मुझसे संबंधित है यह संबंध वर्तमान में हो सकता है या अतीत से चला आ सकता है। यदि संगीत मेरे अनुभवों की व्याख्या करता है तो संगीत एवं मेरी रूचि दोनों आत्मनिष्ठ हो जाते है। स्काउट ने रूचि को आत्मनिष्ठा के रूप में ही प्रयोग किया है। रूचि के संबंध में विभिन्न व्यक्तियों ने अपनी अलग–अलग परिभाषाएं दी है–

बिंघम :– रूचि किसी अनुभव में लिप्त हो जाने एवं उसे चालू रखने की प्रवृति है।

क्रो एण्ड क्रो :– रूचि वह प्रेरक शक्ति है जो हमे किसी व्यक्ति, वस्तु, या क्रिया के प्रति ध्यान देने के लिए प्रेरित करती है।

शिक्षा में गुणात्मक लाने के लिए यह आवश्यक है कि शिक्षार्थियों में विविध प्रकार की रूचियों का विकास किया जाये, जिससे वे विभिन्न विषयों के ज्ञान को सहज रूप से ग्रहण कर सके। बालकों की रूचियां मूल प्रकृति एवं आवश्यकता से प्रभावित होती है। अतः उन बालकों की मूल प्रवृतियों को उत्प्रेरित करना चाहिए और उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति करनी चाहिए विभिन्न अवस्थाओं में विभिन्न प्रकार की रूचियां होती है अतः अवस्थाओं को ध्यान में रखकर उनकी रूचियों का विकास करना चाहिए।

निरन्तर एक ही विषय पढने से बालकों में थकान का अनुभव होता है जिससे बालक उस विषय में रूचि लेना बंद कर देता है। अतः अभिभावक को उसकी रूचि के अनुसार विषय में तभी रूचि आती है जब उनको इस बात का ज्ञान हो जाता है। कि अमुक विषय का उससे क्या संबंध है। उसका उन पर क्या प्रभाव पडता है। विभिन्नता रोचकता को सुरक्षा प्रदान करती है अतः अभिभावकों को बालकों के शिक्षण को रोचक एवं प्रभावी बनाने हेतु नवीन शिक्षण विधियों एवं श्रव्य–दृश्य सामग्री का प्रयोग भी करना चाहिए।

अभिभावकों का शैक्षिक स्तर बालक को जहां नकारात्मक संवेगों से बचने में मददगार होता है वही सकारात्मक संवेगों से बालक की रूचियों एवं शैक्षिक उपलब्धि की प्राप्ति में सहायक होता है। बालक की अच्छी या बुरी रूचियां तथा आदते परिवार में ही विकसित होती है परिवार के सभी सदस्य जिन बातों अथवा वस्तुओं को अच्छा बुरा कहते है बालके भी उन्हे वैसा ही कहने लगता है इस प्रकार परिवार में रहते हुए बालक के अंदर आरम्भ

IJTRE Since 2013

 Copyright 2022.All rights reserved.

से ही अच्छी एवं बुरी रूचियों तथा आदतो का विकास होने लगता है बचपन में पडी हुई यह रूचियां तथा आदते आगे चलकर बालक के चरित्र को प्रभावित करती है जो परिवार इस संबंध में पहले से ही सर्तक रहते है उनके बालकों की आरम्भ से ही वांछनीय रूचियां तथा प्रशासनीय आदतें विकसित होने लगती है। इसके विररित जो परिवार इस संबंध में आँखे मींच लेते है उनके बालकों में अनुचित रूचियां तथा बुरी आदते पड़ जाती है। अभिभावकों की यह असावधानी बालकों के लिए तथा उनके स्वयं के लिए आगे चलकर महंगी पड़ती है। अतः बालकों में सकारात्मक रूचियों के विकास में अभिभावक अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते है।

किसी व्यक्ति की उत्कृष्ट शिक्षा में जितना योगदान समाज विद्यालय राष्ट्र का होता है उतना ही, या उसमें भी अधिक योगदान उसके परिवार अर्थात अभिभावकों का होता है। मानव विकास को जानने के लिए शिक्षाविदों एवं मनोवैज्ञानिकों ने अनेक प्रयोग व अध्ययन किए और अध्ययन में पाया कि बालक के विकास पर वंशानुक्रम एवं वातावरण का प्रभाव पड़ता है। कैण्डोल ने Ýांस के 552 विद्वानों के परिवारों का अध्ययन किया और पाया कि सभी विद्वानों के परिवारों के सदस्य शिक्षित एवं योग्य थे। टरमैन तथा मैरिल ने अपने अध्ययन के आधार पर यह स्पष्ट किया कि बच्चों की बुद्धिलब्धि पर उसके माता पिता की शैक्षिक, सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति का प्रभाव पड़ता है। इस आधार पर कह सकते हैं कि बालक की शैक्षिक उपलब्धि, शैक्षिक रूचि, मूल्यों पर अभिभावकों के शैक्षिक स्तर का प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचि

1. अग्रवाल, विनोद कुमार (1994). शिक्षा और राजनीति, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
2. अरोडा, रीता एवं मारवाह, सुदेश, (2007). शिक्षा मनोविज्ञान एवं सांख्यिकी, चौड़ा रास्ता, जयपुर, शिक्षा प्रकाशन।
3. अस्थाना, रामनारायण व अस्थाना (1990). मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन, आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर।
4. दुबे, प्रो. एल. एन. एवं बरोदे, प्रो. बी. आर. (2009) : शिक्षा मनोविज्ञान, आरोही प्रकाशन, साउथ सिविल लाइन्स, जबलपुर, प्रथम संस्करण।
5. पाठक, पी.डी, : (2007) "शिक्षा मनोविज्ञान", विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
6. पाण्डेय, के.पी., : (2006) "शैक्षिक अनुसंधान", विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
7. पाण्डेय, आर.एस., : (2007) "उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक", विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
8. भटनागर, सुरेश (2009). शिक्षा मनोविज्ञान : लायल बुक डिपो. मेरठ।
9. श्रीवास्तव डी.एन. एवं वर्मा प्रीति (2014) बाल मनोविज्ञानः बाल विकास, श्री विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

IJTRE
Since 2013

 Copyright 2022.All rights reserved.